ISSUE - 4
YEAR - 4

AUGUST - 2016

ISSN - 2320-7620
VOLUME : 13

National Seminar on

STARTUP-STANDUP AND MAKE IN INDIA

VIEW OF SPACE

An International Refereed Multidisciplinary
Journal of Applied Research

In Collaboration With

AFFILIATED TO VIDHYABHARATI GUJARAT PRADESH
LATE. RATILAL VAGHASIYA SMARAK TRUST SANCHALIT
SHRI SARSWATI SHIKSHAN MAHAVIDHYALAYA
(B.Ed. & M.Ed. COLLEGE)
BHUTWAD - DHORAJI

Scanned by CamScanner

VIEW OF SPACE :2320-7620
An International Refereed Multidisciplinary Journal Of Applied Research

INDEX

SR.NO.	TITLE & AUTHOR	PAGE NO.
1	STEPPING UP THE HUMAN RESOURCES SKILLS TO MEET THE GLOBAL CHALLENGES DR.SHYAMAL PRADHAN	1 TO 6
2	SIGNIFICANCE OF LIBRARY SCIENCE IN INFORMATION DISSEMINATION: A NECESSITY FOR SKILL UP INDIA PRIYA DIWANJI DR. MITAL MANAVADARIA	7 TO 11
3	मूल्य शिक्षा : प्रवृत्ति आधारित अध्ययन डो. भावेश आई. रावल	12 TO 15
4	'वलसाड जिले के किशोर विध्यार्थीयों के मानसिक स्वास्थ्य पर योग की असर का तुलनात्मक अध्यायन भाविकाबेन एस. पटेल	16 TO 21
5	हिन्दी भाषा के विकास में मीड्या का योगदान डॉ. बी. डी. डोडिया	22 TO 23
6	નવમાં ધોરણના ગણિતનાં 'ત્રિકોણ' એકમના અધ્યાપન માટે ..... ડૉ. એ. આર. ભરડા ભરત જી. થાનકી	24 TO 27
7	ધોરણ અગિયારના વાણિજ્ય વ્યવસ્થામાં 'ઈ–કોમર્સ અને આઉટ સોર્સિંગ' ... ડૉ. એ. આર. ભરડા જયના એચ. મહેતા	28 TO 31
8	બી.એડ્. ના તાલીમાર્થીઓમાં યોગ પદ્ધતિ કાર્યક્રમની અસરકારકતા ડૉ. એ. આર. ભરડા રવિગીરી. એલ. ગૌસ્વામી	32 TO 34
9	બી.એડ્.ના પ્રશિક્ષાર્થીઓમાં સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાઓ અંગેની સભાનતા સાગર જે. મહેતા	35 TO 39
10	સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાઓ માટે ઉપલબ્ધ ઓનલાઈન સાહિત્ય અંગે બી.એડ્.ના... રિમ્પલ જે. મહેતા	40 TO 45
11	દસમાં ધોરણના અંગ્રેજી વિષયના પસંદિત એકમ માટે PBL હર્ષિદા આર. શુકલ	46 TO 50

Scanned by CamScanner

VIEW OF SPACE :2320-7620
AN INTERNATIONAL REFEREED MULTIDISCIPLINARY JOURNAL OF APPLIED RESEARCH

मूल्य शिक्षा : प्रवृत्ति आधारित अध्ययन

डो. भावेश आई. रावल
प्रधानाचार्य, श्री महावीर विद्यामंदिर ट्रस्ट बी.एड्. कोलेज, सुरत-गुजरात

KEYWORDS:

ABSTRACT
The present article deals with value education in the Institute. In the beginning at the article the authors have attempted to justify the need of value based Education in the society. There after pointing to the aims and activities of value education. Discuss a scope of values and related content points. Finally the authors have given one Modal of activity based value education.

प्रस्तावना

भारतीय मान्यता के अनुसार 'न हि मनुष्यात् श्रेष्ठतरं किंचित्' अर्थात् मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ नहीं है। मनुष्य को श्रेष्ठत्व प्राप्त करने के लिए शिक्षित होना अनिवार्य है। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य संस्कारक्षम बनता है। स्वामी विवेकानंद के मतानुसार मनुष्य की दिव्यता को बाहर लाने की प्रक्रिया शिक्षा है। गांधीजीने भी मन, शरीर और आत्मा मे निहित श्रेष्ठता को बाहर लाने की बात कही हैं। मूल्य मीमासंको ने सौंदर्य एवं कल्याण को मनुष्य के विकास के लिए उपकारक बताया है। कालेलकर ने मूल्य की परिभाषा देते हुए कहा है कि जो जीवनरीति में निहित विवेक को जागृत करे उसे मूल्य कहते है। जो बालक को आत्मसाक्षात्कार के विकास की और ले जाता है। मूल्य माने मनुष्यका वर्तन, उसकी रहनसहन, मान्यताए, रीतिरिवाज और आदर्शोका समुच्चय।

प्राचीन भारतीय 'शिक्षा और समाज' मूल्य आधारित थे, उसका प्रमाण वेद, साहित्य मे मिलता है। कालान्तर में मानवीय आदर्श, विवेक एवं कार्यरीति अर्थकेन्द्री बनती चली उसी के परिणाम स्वरूप मूल्य ह्रास समाज में व्यापक बन गया। यहाँ तक की शिक्षा के मूलाधार तात्विक एवं सामाजिक चिन्तन

दोनों पहलु खोखले होते चले और शिक्षा भी मूल्यहीन अवस्था में पहूँच गयी। शिक्षा के आधारभूत उद्देश्य 'चरित्र निर्माण' और 'मनुष्य निर्माण' सिद्ध होने की बजाय पैसे कमानेवाली मशीन

जैसे मनुष्यकी निर्मित हुई जो पैसे के लिए विश्व वसुधा, राष्ट्र, समाज, परिवार यहाँ तक की स्वहित भी पैसे के तराजु में देखने लगा है।

मूल्यह्रास और मूल्य विहिनता को ध्यान में रखते हुए NPE-1986 मे मूल्य शिक्षा पर बल दिया गया। इस शिक्षा नीति मे ८४ मूल्यो की सूची दी गई है। आज प्राथमिक शिक्षा से ही 'नैतिक शिक्षा' के स्वरूप में छात्रों को मूल्याभिमुख किया जाता है। मूल्यशिक्षा क्या है? मूल्य शिक्षा को परिभाषित करे तो 'वह शिक्षा जो मनुष्य को व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व एवं प्रकृति के प्रति सद्भाव और समभाव रखते हुए कार्य करने की प्रेरणा दे।'

मूल्य शिक्षा के उद्देश्य

मूल्य शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य ज्ञान से अधिक आचरण का है। इस लिए मूल्य शिक्षा का आधार मन के संस्कार और हदय को घडनेवाली शिक्षा पर है। मूल्य शिक्षाके उद्देश्य निम्नलिखित जैसे हो सकते है।

- छात्र विभिन्न मूल्यो की शिक्षा प्राप्त करे।
- मूल्यो संबद्ध मे ज्ञान एवं समझा का विकास हो।

Scanned by CamScanner

- छात्र तार्किक विचार करने के लिए सक्षम बने।
- छात्रों में अच्छी आदतें और वलण का विकास हो।
- छात्र मूल्यो के सन्दर्भमें विशेष संवेदनशील बनने का प्रयास करे।
- छात्र अपने विचार एवं आचरण से गलत ख्यालो को दूर करे।
- छात्र आत्मोन्नति के लिए प्रयासशील बने।
- छात्र अन्यो के लिए सकारात्मक ख्याल रखे।

मूल्य शिक्षा के क्षेत्र

मूल्यो के प्रकार उस क्षेत्र एवं मूल्य पर शिक्षा प्रदान करने के आयोजन में आधार बनते हैं। व्यवहारिक दृष्टि से मूल्य को आठ भागो में विभाजित कर सकते हैं जो निम्नलिखित है।

मूल्य शिक्षा के क्षेत्र

क्रम	एूल्य	मूल्य अंतर्गत विषयवस्तु
१	व्यक्तिगत	आत्मविश्वास, सहिष्णुता, कर्तव्य परायणता, निष्ठा, श्रम का गौरव, चारित्र्य, नेतृत्व।
२.	सामाजिक	सहकार की भावना, बंधुत्व, पारिवारिक भाव, साझा मिलकतो का रखरखाव।
३.	आर्थिक मूल्य	उत्पादक श्रम, शोषणविहीन समाज व्यवस्था, जीवन क्षमता।
४.	नैतिक मूल्य	प्रामाणिकता, मानवता, निखालसता, खेलदिली, शुद्धता, नैतिक हिंमत।
५.	सांस्कृतिक मूल्य	सर्वधर्म समभाव, नम्रता, चोरी न करना, जूठ न बोलना, अस्पृश्यता निवारण, स्वाश्रय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, सांस्कृतिक विरासत को संभालना।
६.	राष्ट्रीय मूल्य	नागरिकत्व, स्वापर्ण की भावना, निरक्षरता निवारण, पर्यावरण संतुलन, वतनप्रेम, राष्ट्रप्रेम।
७.	आध्यात्मिक मूल्य	भारतकी अप्रतिम भेट, प्रभुप्रेम, सुखशांति, तपश्चर्या, धार्मिकता, आध्यात्मिक वलण।
८.	आंतरराष्ट्रीय मूल्य	विश्व बंधुत्व की भावना, पारस्परिक सहकार, विश्व नागरिकता, पर्यावरण जागृतता, आध्यात्मिक एकता, सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, सत्यानुभूति, सौन्दर्यानुभूति।

मूल्य शिक्षा के लिए आवश्यक प्रवृत्तियाँ

मूल्य शिक्षा के अन्तर्गत मूल्यो के बारे में ज्ञान प्राप्त एवं प्रदान करने के लिए एवं समझा स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ करेंगे।

- प्राचीन साहित्य का अध्ययन करना।
- मूल्यो का सही अर्थ जानना, समझाना, समझाना।
- मूल्यो के बारे में रामायण, महाभारत और अन्य नीति ग्रंथों का अध्ययन करना।
- मूल्य संदर्भ में समाचार, आर्टिकल, चित्र, कविता, वार्ता का संकलन करने के लिए समाचार पत्र और सामयिकों का अध्ययन करना।
- नवीन और पुराने मूल्यो के बीच के संघर्ष के कारण जानना।
- धर्मगुरू, आचार्य, विद्वानों से समस्याओ का समाधान करना।
- धर्म, धर्मग्रंथ, धर्मस्थानो की मुलाकात लेकर जानकारी लेना।
- धार्मिक उत्त्सवो मनाना एवं सहभागी बनना।

Scanned by CamScanner

- सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अपना दायित्व अदा करना।
- सामाजिक घटनाओं पर चर्चा करना।

इस प्रकार की और भी प्रवृत्तियों को जोडकर मूल्यो के सन्दर्भ में वास्तव दर्शन किया जा सकता है। यहाँ शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक, चिंतक और मित्र की रहेगीं। विद्यालय और शिक्षक के सक्रिय प्रयास, व्यवस्था और गतिविधियाँ छात्रो को मूल्याभिमुख बनाएगी और उसमें मूल्य सिंचन भी कर सकती है। यह तब संभव है जब शिक्षा के माध्यम से छात्रो में संस्कार निर्माण की प्रक्रिया हो। मूल्य शिक्षा का व्यावहारिक प्रतिमान यहाँ प्रस्तुत किया है जिसमें छात्र प्रवृत्ति के साथ मूल्य अभिभूत बनते है।

मूल्य शिक्षा का प्रवृत्ति आधारित प्रतिमान

क्रम	प्रवृत्ति	स्त्रोतः अर्थ एवं सामग्री	समयावधि
१	संगीत सुनना	केसेट प्लेयर, सी.डी., डी.वी.डी., अन्य	१० मिनिट
२	विभिन्न धर्मोकी प्रार्थना प्रस्तुति	केसेट प्लेयर, सी.डी., डी.वी.डी., कलाकार सहित	१५ मिनिट
३	व्याख्यान, श्लोक, स्लोगन एवं नीति वाक्य	समाज के वक्ता, रेकोर्डेड वक्तव्य, धार्मिक व्यक्ति, संत	३ बार ५५ मिनिट
४	ब्रेईन स्ट्रोमिंग सत्र	मूल्यो की संकल्पना	४० मिनिट
५	सामाजिक, राष्ट्रीय एवं आंतर राष्ट्रीय, धार्मिक संस्थानो की प्रवृत्तियाँ	माहिती का संकलन, पुस्तक, सामयिक, गेझेट्स के माध्यम से	४० मिनिट
६	पोर्टफोलियो का विकास	आर्टिकल, समाचार सामग्री, चित्रवार्ता, अध्ययन सामग्रीका एकत्रीकरण	रोजाना
७	बुलेटिन बोर्ड पर प्रस्तुतिकरण	आर्टिकल्स, काव्य, चित्र, स्लोगन, विचारसूत्र का एकत्रीकरण	रोजाना
८	चलचित्र निदर्शन	इन्टरनेट, सी.डी., डी.वी.डी., ग्रंथालय	सत्र में एक बार
९	पोलिस स्टेशन जिलाध्यक्ष कार्यालय सिविल अस्पताल एवं न्यायालय	मुलाकात, प्रश्नोत्तरी, साक्ष्य चर्चा के द्वारा सकारात्मक एवं नकारात्मक बातों का संकलन करना.	२ बार ३०×२ मिनिट
१०	शेरी, गाँव, शहर, नगर में सामाजिक संस्थाओ के साथ बैठक करना	प्रश्नोत्तरी, मुलाकात, चर्चा के द्वारा भूमिका, कार्य, विभिन्न समस्याओ के बारे में	२ बार ३०×२ मिनिट
११	व्यक्ति अभ्यास (Case study)	व्यक्ति, संस्थान, संगठन, प्रोजेक्ट, तजज्ञ द्वारा अध्ययन	४-५ बार ५५ मिनिट प्रति अभ्यास
१२	सर्जनात्मक कार्य	चित्र, स्लोगन बनाना, कार्टुन बनाने जैसी प्रवृत्तियाँ	२ कलाक
१३	वेबसाइट मुलाकात	इन्टरनेट	३० मिनिट महिने मे ३ बार
१४	डायरी लेखन चिंतनात्मक जर्नल	ष्वविचार	रोजाना १० मिनिट
१५	विभिन्न रमत	मैदान पर खेलना	रोजाना ३० मिनिट

Scanned by CamScanner

उपसंहार

अन्त मे यह कह सकते है कि मूल्य शिक्षा वर्तमान समय मे शिक्षा एवं समाज की आवश्यकता है। कई विश्व विद्यालयो में मूल्य शिक्षा को विषय के रूप मे अध्यापन कराया जाता है। फिर भी मूल्य शिक्षा की सैद्धांतिक बाते पढाने के साथ विद्यालय या संस्था की नीति-रीति, व्यवस्था व्यवहार, क्रियाए, कार्यप्रणालि मे सुनियोजित ढंग से शामिल करने पर छात्र प्रवृत्तियों के संपर्क, अनुभव से मूल्य दर्शन कर सकते है। ऐसी मूल्य शिक्षा अनुभवजन्य, समझा आधारित और दुरोगामी होगी।

सन्दर्भ

- पटेल नानुभाई. (२०१०), मूल्य शिक्षण. बिलिमोरा : श्रीरंग शिक्षण महाविद्यालय
- Brahma Kumari's. (2005), Valu Education "Values in your life. Abu Road, Shantivan Mount Abu.
- राज प्रफुल्लसिंह. (२००७), उत्कर्ष अंक-१८, खरोड : कोलेज ओफ एज्युकेशन. पृष्ठ १४-१७.
- पटेल, हर्षद. (२००८), आदित्य किरण : मूल्य एटले, अहमदाबाद : क्षिति पब्लिकेशन. पृष्ठ ६-७

Scanned by CamScanner